काश, मुझे किसी ने बताया होता?

पुस्तक अंश

सच कहूँ तो जब मैं छोटी थी तब मुझे सब बुज़ुर्ग अच्छे नहीं लगते थे। कुछ ही बुज़ुर्ग थे जो मुझे अच्छे लगते थे। ये वे लोग थे जो मुझ से प्यार और इज़्ज़त से पेश आते थे। इज़्ज़त से पेश आने से मेरा मतलब है वे मुझे बुद्धु नहीं समझते थे। वे मुझसे यूँ बात करते थे जैसे मैं भी समझदार हूँ, अक्ल की बात कर सकती हूँ। जब मैं बात करती थी वे ध्यान से सुनते थे।

वे मुझे छूते भी प्यार और आदर से थे। यानी वे ज़ोर-से मेरे गाल नहीं नोचते थे। ज़बरदस्ती मुझे अपनी तरफ नहीं खींचते थे। उनका छूना मुझे अच्छा लगता था। उनके स्पर्श से मुझे सुरक्षित होने का अहसास होता था। हालाँकि मैं छोटी थी फिर भी वे मुझे एक शख्स या व्यक्ति समझते थे। आज भी ऐसे बुज़ुर्गों को याद करना मुझे अच्छा लगता है। लेकिन कुछ और बुज़ुर्ग थे जो मुझे नहीं भाते थे, क्योंकि वे गड़बड़ करते थे। मसलन वे ज़ोर से मेरे गाल खींचकर अपना प्यार जताते थे। मेरे गाल लाल हो जाते थे और मुझे दर्द होता था।

ऐसा प्यार मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था और न ही इस तरह प्यार करने वाले मुझे भाते थे। मैं सोचती थी, कैसे अजीब लोग हैं! इन्हें यह भी नहीं पता कि ज़ोर से गाल खींचने से बच्चों को दर्द होता है।

सच कहूँ, तो कभी-कभी मेरा दिल करता था कि मैं भी "प्यार" से ऐसे लोगों के गाल नोचूँ। शायद तब उन्हें पता लगता कि हम बच्चों को उनकी हरकतें कैसी लगती हैं।

लेकिन मेरे बचपन में कुछ लोग थे, जो शुरू में मुझे बहुत पसन्द थे, पर बाद में मैं उनसे डरने लगी थी। और उनसे दूर रहने की कोशिश करती थी क्योंकि उन्होंने मेरे शरीर को गलत और बुरे ढंग से छुआ था।

ये लोग मेरे जैसे लोगों का दिल जीतना जानते थे। वे मेरी पसन्द-नापसन्द समझने की कोशिश करते थे। मेरे नज़दीक आने और मेरा विश्वास जीतने के बाद इन्हीं लोगों ने मुझे कई बार जिस तरह छुआ और चूमा, उससे मैं बौखला-सी गई। सब कुछ ठीक से समझ भी न सकी। उनकी हरकत नहीं समझी। अपनी प्रतिक्रिया भी नहीं समझी ठीक-से। पर न जाने क्यों और कैसे मैं जानती थी कि अकेले में किए उनके स्पर्श ठीक नहीं थे। गलत थे, गन्दे थे। इसलिए तो वे मुझे अकेले में ही उस तरह छूते थे, सब के सामने नहीं। ये सब लोग मुझ से बहुत बड़े थे। कई तो 50-60 साल के थे।

मुझे याद है मेरे बड़े भैया के एक दोस्त जो मुझे अच्छे लगते थे पर अकेले में मौका पाकर वे मुझे होंठो पर चूमते। उनका इस तरह चूमना मुझे बुरा और गलत लगता था।

मैं अक्सर अपने आप से पूछती हूँ कि मैं क्यों खामोश रही?

क्यों मैंने किसी को कुछ नहीं बताया? क्या मुझे इस बात का डर था कि माँ-पिताजी या मेरे भाई-बहन मेरी बात नहीं मानेंगे? मुझ पर एतबार नहीं करेंगे? उल्टा मुझे ही डाँटेंगे? एक बच्चे की बात पर कौन एतबार करेगा? या क्या मैं इसलिए खामोश रही क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि शायद मैं ही कुसूरवार हूँ।

मुझे आज भी नहीं मालूम मैं क्यों खामोश रही?

क्यों?

काश मुझे किसी ने बताया होता!
लेखिका: कमला भसीन
चित्र: बिन्दिया थापर
प्रकाशक: जागोरी, बुक्स फॉर चेंज
सम्पर्क: 011-26257015, 011-51642348
कीमत: 15 रुपए